ज़िम्मेदारी का महत्व

राल्फ बंच की कहानी

ज़िम्मेदारी का महत्व

राल्फ बंच की कहानी

लेखक : ऐन डोनेगन जॉनसन

यह एक बहुत ज़िम्मेदार व्यक्ति राल्फ बंच की कहानी है। यह कहानी उसके जीवन की घटनाओं पर आधारित है।

राल्फ बंच के बारे में अन्य ऐतिहासिक तथ्य अंतिम पृष्ठ पर दिए गए हैं।

यह बहुत पुरानी बात नहीं है, जब राल्फ बंच नाम का एक छोटा बालक डेट्रायट शहर की नीग्रो बस्ती के बीचोंबीच एक बदहाल घर में रहता था।

निश्चय ही, राल्फ अपने परिवार के साथ रहता था, और उसका परिवार काफ़ी बड़ा था। सबसे पहले तो थीं उसकी दुबली-पतली और बहादुर दादी, श्रीमती जॉनसन। और फिर थे राल्फ के माता-पिता। उसके मृदुभाषी और विनयशील पिता थे फ्रेड, और उसकी मां ओलिव एग्नेस। राल्फ की दो बुआएँ नेल्ली और एथेल भी उनके साथ रहती थीं। और हाँ, कितने मेहनती थे सभी।

राल्फ के पिता उस बदहाल घर के पहले माले पर एक बाल काटने की दुकान में काम करते थे। वे दस सेंट में लोगों के बाल काटते, और पांच सेंट में दाढ़ी बनाते।

लेकिन इतने बड़े परिवार को चलाने के लिए बहुत सारे सिक्कों की ज़रूरत होती थी, पांच और दस सेंट के ही नहीं, २५ और ५० सेंट और डॉलर के सिक्कों की भी। इसलिए राल्फ की मां भी काम करती थी, और उसकी बुआएँ भी, और दादी, श्रीमती जॉनसन भी। ये महिलाऐं कभी बाहर जाकर काम करती थीं, और कभी अपना काम घर पर ही ले आती थीं।

एक बार राल्फ घर आया, तो देखा कि उसकी माँ और दादी मेज़ पर बैठी कुछ सिलाई कर रही थीं। नज़दीक के खिलौने बनाने वाले कारखाने के लिए वे गुड्डे गुड़ियों की पोशाकें सिल रही थीं। "हर एक पोशाक के लिए हमें बीस सेंट मिलेंग," दादी ने कहा। "अगर हम जल्दी जल्दी काम कर पाएं तो ये पैसे बुरे नहीं हैं।"

राल्फ भी काम करता था, हालाँकि वह अभी केवल सात वर्ष का था। रोज़ाना स्कूल के बाद वह सड़क के किनारे अख़बार बेचता था। "ताज़ा खबर!", वह चिल्लाता। "पढ़िए तरोताज़ा ख़बरें। ले जाइये आज का अख़बार।"

जब उसके सब अख़बार बिक जाते, तो वह कमाए हुए सारे सिक्के घर ले जाता और मेज़ पर उनकी ढेरी लगा देता, ताकि दादी उन्हें गिन सकें। किसी-किसी हफ्ते तो वह एक डॉलर से भी ज़्यादा कमा लेता था।

"कितना अच्छा लगता है," वह ख़ुशी से कहता। "मैं भी अपना योगदान दे रहा हूँ।"

दादी केवल मुस्कुरा देतीं। उन्होंने कभी राल्फ को काम करने से रोका नहीं, और न ही यह कहा कि इतनी वह मेहनत न करे। उन दिनों हरेक परिवार में सभी सदस्यों को परिवार की सहायता के लिए जो बन पड़े करना पड़ता था।

जल्दी ही राल्फ को महसूस हुआ कि नीग्रो इलाके में वह अधिक अख़बार नहीं बेच पायेगा। अधिकांश नीग्रो लोगों के पास अख़बार खरीदने के पैसे नहीं थे।

"ठीक है," मन ही मन राल्फ ने सोचा। "यहाँ के बजाय मैं उन इलाकों में जाऊंगा जहाँ लोगों के पास अधिक पैसा हो।"

चलते चलते राल्फ कैडिलक स्क्वायर नाम की जगह पहुँच गया। वहां कई सिनेमाघर थे, बड़ी दुकानें थीं, और महंगे कपड़ों से सजे लोगों की भीड़।

"हाँ, मुझे यहाँ काम करना चाहिए," फुटपाथ पर खड़े राल्फ ने सोचा। "अख़बार," वह चिल्लाया। "आज का अख़बार ले जाइये।“

वह नन्हा सा था, और बहुत साहसी था।
बहुत से अमीर लोगों ने उससे अख़बार ख़रीदे।
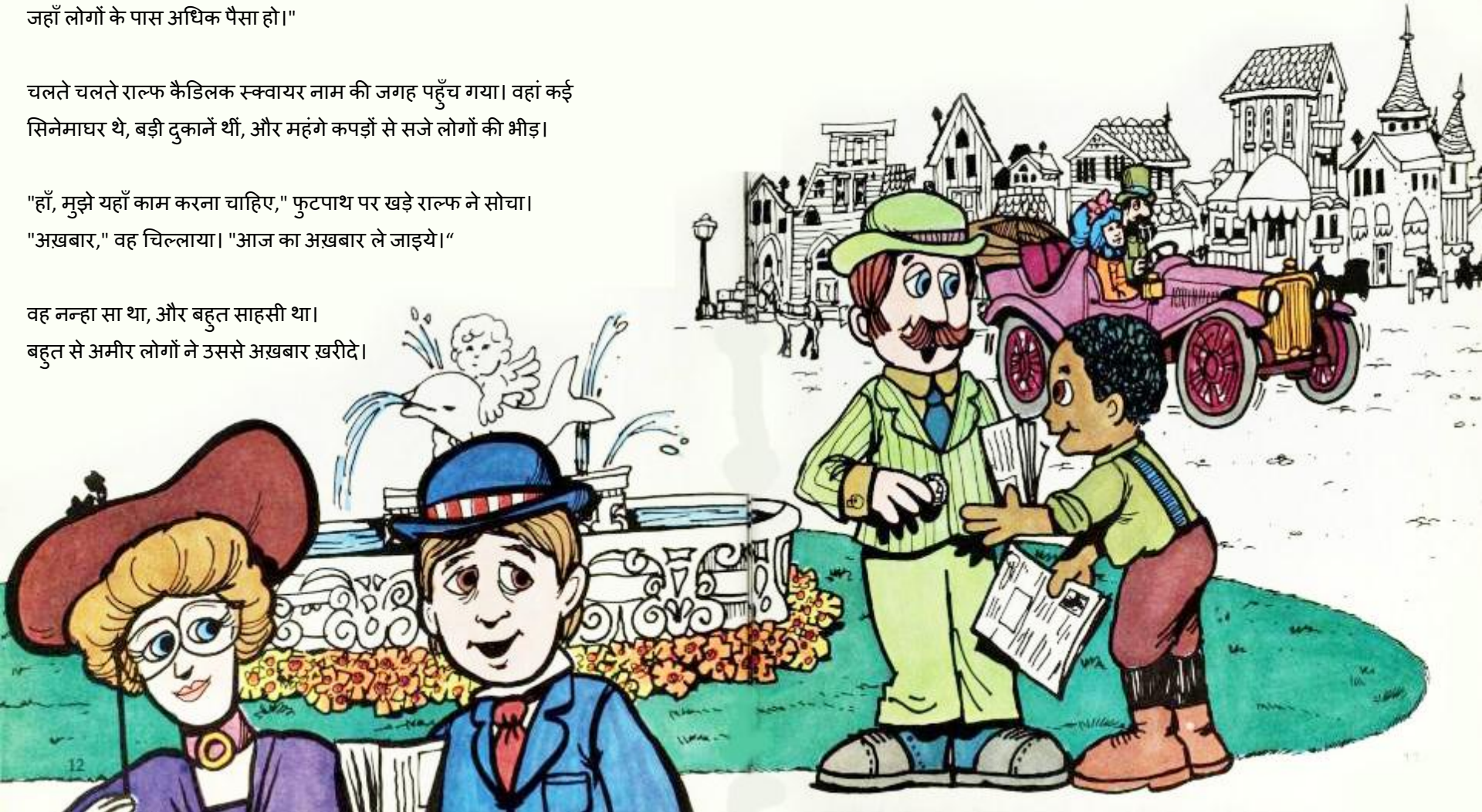
उस दिन रात को जब राल्फ घर पहुँचा, तो वह बहुत प्रसन्न और उत्साहित था। उसके पास दादी को देने के लिए एक, पांच और दस सेण्ट के ढेरों सिक्के थे। वह सबको किस्से सुनाना चाहता था, उन सभी सजी-धजी महिलाओं के, और कोट-टाई और हैट लगाए पुरूषों के, जिन्हें उसने आज देखा था।

"हाँ, कुछ लोग ऐसी ही ज़िन्दगी जीते हैं," दादी ने कहा। "लेकिन तुम क्या पहनते-ओढ़ते हो, यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि तुम स्वयं के बारे में कैसा महसूस करते हो।"

फिर दादी ने राल्फ को उसके दादाजी, यानि राल्फ जॉनसन के बारे में बताया। "तुम्हें उन्हीं का नाम दिया गया है," उसने कहा, "और उनका जन्म एक गुलाम परिवार में हुआ था। लेकिन गुलाम होने में कोई शर्मिंदगी की बात नहीं है। राल्फ, तुम जो कुछ भी हो, उसके लिए तुम्हें कभी शर्मिंदा नहीं होने चाहिए। स्वाभिमानी बनो, जैसे कि तुम्हारे दादाजी थे। वह एक बहुत अच्छे इंसान थे, और अगर तुम ठीक से ज़िन्दगी जियोगे तो तुम भी एक दिन बहुत ख़ास इंसान बनोगे।"

दादी ने राल्फ को गले से लगाया, और उसे सोने के लिए भेज दिया। फिर वह दोबारा अपने सिलाई के काम में लग गई।
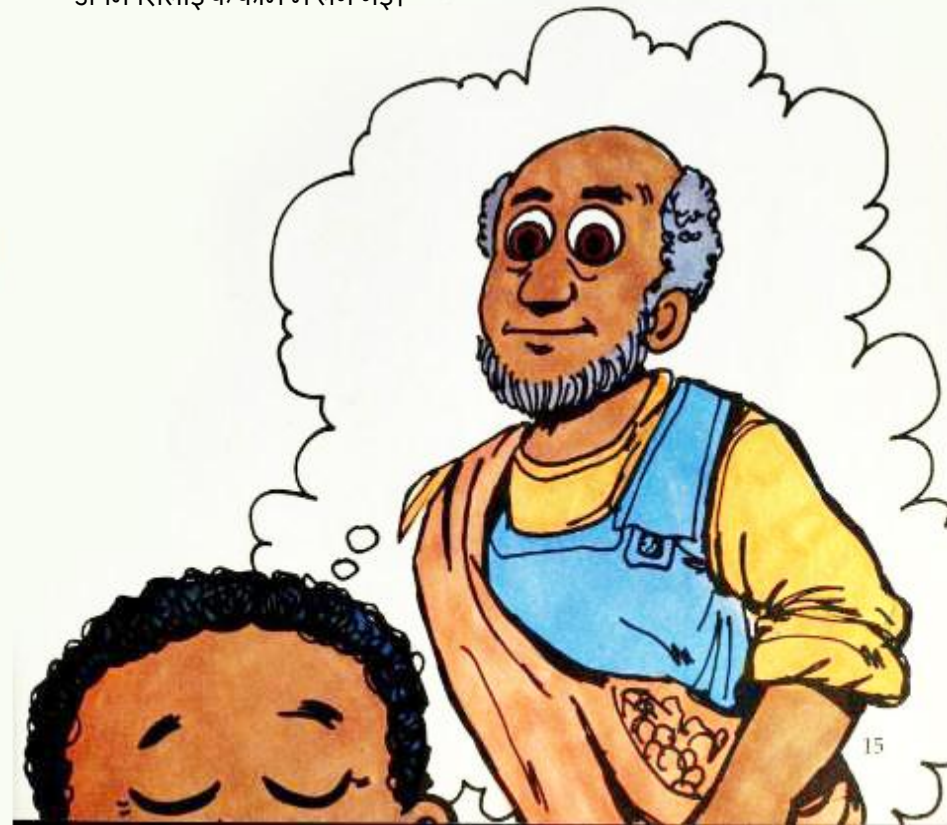
राल्फ हर समय काम ही नहीं करता रहता था। वह स्कूल जाता था, और घर पर भी स्कूल से मिला होमवर्क करता था, उसके बाद अख़बार भी बेचता था। लेकिन फिर भी वह अन्य बच्चों के साथ खेलने के लिए समय निकाल ही लेता था। बेसबॉल उसका प्रिय खेल था। लेकिन खेल हमेशा शांतिपूर्ण नहीं होता था। कभी कभी झगडे भी हो जाते थे।

"मैं बिलकुल भी आउट नहीं हुआ!" एक दिन एक लड़के ने चिल्ला कर कहा।

"चलो जाओ," दूसरा चिल्लाया। "तुम आउट हो चुके हो।"

"ठहरो," राल्फ ने कहा, "हमें एक अंपायर की ज़रूरत है।"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता!", नज़दीक से एक नौजवान की आवाज़ आई।

राल्फ ने मुड़ कर देखा। उसके नज़दीक ही नीला सूट और टोपी पहने, दीवार का सहारा लिए ठिगने कद का एक नौजवान खड़ा था।

"तुम मुझे अम्प बुला सकते हो," उस लड़के ने कहा। उसने चेहरे पर पहने मुखौटे को ऊपर सरका दिया, जिससे राल्फ उसकी काली शरारती आँखें देख सकता था। उसके चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान थी, बिलकुल राल्फ की ही तरह। असल में उसकी शक्ल राल्फ से काफी मिलती थी।

"तुम एक बुद्धिमान लड़के हो," उस नौजवान ने कहा। "तुम अच्छी तरह जानते हो कि कौन सही है, और कौन ग़लत। तो फिर फैसला लेने के लिए तुम्हें अंपायर की क्या ज़रूरत है। खुद ही निपटा लो इस मसले को।"

राल्फ मुस्कुराया। वह अच्छी तरह जानता था कि असल में वहां नीला सूट पहने, दीवार का सहारा लिए कोई भी नहीं खड़ा था। वह समझता था उसके सामने खड़ा अम्प मात्र उसकी कल्पना ही थी। जब वह अम्प को बोलते सुनता, तो असल में वह अपने ही मन की आवाज़ सुन रहा था। लेकिन फिर भी, एक काल्पनिक मित्र से दोस्ती का विचार राल्फ को अच्छा लगा। जब खेल समाप्त हुआ तो राल्फ अम्प को भी अपने साथ घर ले गया।

"कितनी व्यस्त जगह है यह," अम्प ने कहा, जब उसने राल्फ का अस्त-व्यस्त घर देखा। राल्फ की माँ और उसकी बुआएँ गुड़ियों की पोशाकें सीने में मशग़ूल थीं, और दादी भोजन पकाने में।

"तुम क्या करते हो, इनकी मदद के लिए?" अम्प ने पूछा।

"मैं अख़बार बेचता हूँ," राल्फ बोला। "जब मैं बड़ा हो जाऊंगा, तो और अधिक करूँगा।"

"मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम अवश्य करोगे," अम्प ने कहा। "तुम एक ज़िम्मेदार लड़के हो।"

"ज़िम्मेदार?", राल्फ ने पलट कर कहा। उसने यह शब्द सुना तो था, लेकिन कभी उसके बारे में सोचा नहीं था। "क्या मतलब है 'ज़िम्मेदार' शब्द का?" उसने पूछा, मन ही मन नहीं, बल्कि ज़ोर से बोल कर।
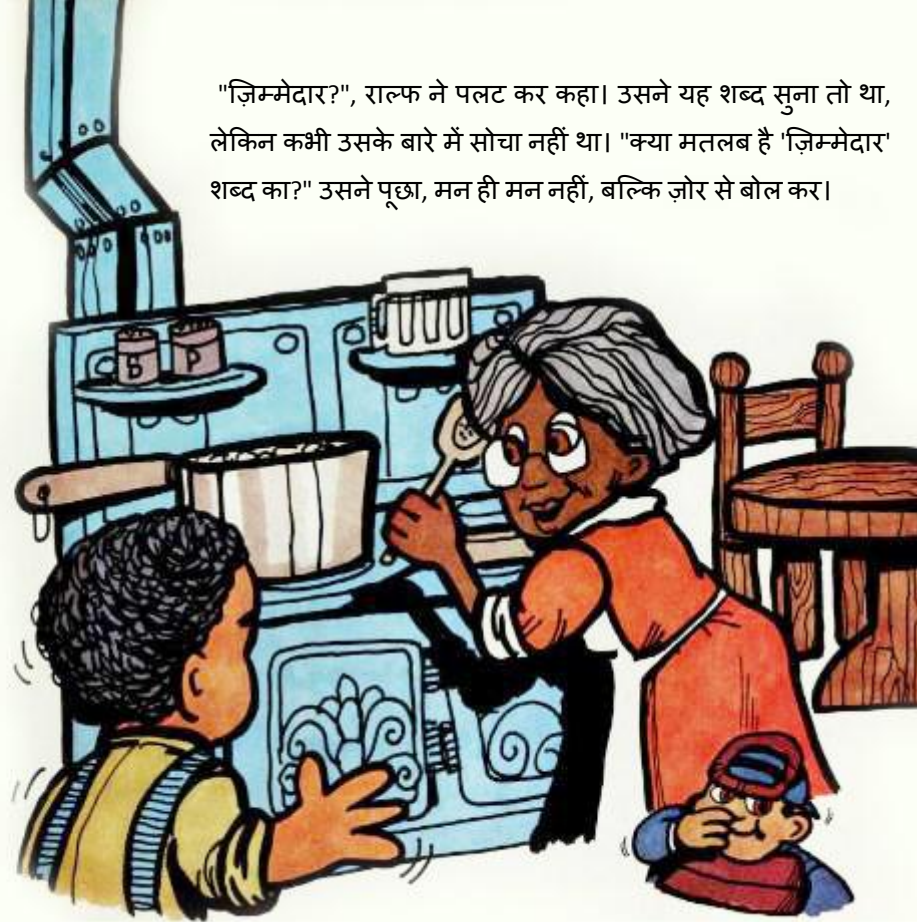
दादी ने, जो कि चूल्हे पर काम कर रही थीं, यह बात सुनी। "जब तुम देख सकते हो कि किसी काम को करने की ज़रूरत है, और उसे कर डालो, इसी का नाम ज़िम्मेदारी है," उन्होंने राल्फ तो बताया। "लेकिन तुम यह क्यों पूछ रहे हो?"

"असल में, मुझे आज एक नया दोस्त मिला है। उसने मुझसे कहा कि मैं ज़िम्मेदार हूँ।"

आगे से राल्फ जहाँ भी जाता, अम्प उसके साथ जाता। दोनों आपस में अनेक विषयों पर बातचीत करते। एक दिन वे उन लोगों के बारे में बात करने लगे जो कैडिलक स्क्वायर में अख़बार बेचते समय राल्फ को आस-पास नज़र आते थे। "यह बिलकुल न्यायोचित नहीं है," राल्फ ने अम्प से कहा। "यहाँ की महिलाओं के पास सुन्दर कपडे लत्ते हैं, और वे महँगी गाड़ियों में घूमती हैं। लेकिन मेरी माँ, दादी, और बुआओं को जीतोड़ मेहनत करनी पड़ती है।"

"तुम इस बात से बिलकुल परेशान मत होना," अम्प ने उसे आगाह किया। "अगर तुम अपने मन में गुस्सा लाओगे, तो नुकसान तुम्हारा ही होगा। सिर्फ ज़िम्मेदारी से अपना काम करते रहो। जो कुछ करना चाहिए, करते रहो, हालात ज़रूर सुधरेंगे।"

फिर राल्फ ने गुस्से या उदासी को अपने पास नहीं फटकने दिया, और जो कुछ ज़रूरी था, वह करता रहा। वह पढाई और काम, दोनों करता रहा। बीच-बीच में उसने बेसबॉल खेलना भी जारी रखा। और वह हमेशा दादी के काम में हाथ बंटाता था।

फिर जब राल्फ दस साल का हुआ, तो परिवार में कुछ बदलाव आये।

राल्फ की छोटी बहन ग्रेस का जन्म हुआ। उसकी देख-रेख करने में राल्फ भी अपनी दादी और बुआओं की मदद करता। उसकी माँ बीमार होने के कारण छोटे बच्चे की पूरी देखभाल नहीं कर पाती थी। राल्फ के पिता भी बीमार हो गए थे। वे हर समय खांसते रहते थे। जल्दी ही उन्होंने काम करना भी बंद कर दिया।

"श्रीमती बंच को जोड़ों का बुखार है," डॉक्टर ने दादी को बताया। "और मिस्टर बंच, उन्हें तो तपेदिक हो गई है।"

उन दिनों बहुत से नीग्रो लोगों को तपेदिक हो जाया करती थी। इस बीमारी के इलाज की अच्छी दवाइयां भी तब नहीं थीं, और ऐसे अस्पताल भी बहुत कम थे, जहाँ गरीब लोग बीमार पड़ने पर अपना इलाज करा सकें।

"हमें कुछ तो करना ही होगा," राल्फ ने कहा, "और हम जो कुछ भी करें, उसमें शायद पैसे की ज़रूरत तो पड़ेगी ही।"

अम्प ने ठंडी साँस लेकर कहा, "हाँ, पैसे की ज़रूरत तो हर काम के लिए पड़ती है।"

कुछ दिन बाद, एक रात जब राल्फ घर लौटा, तो देखा कि दादी और उसकी बुआएँ मेज़ के इर्द-गिर्द बैठी थीं। दादी सिक्कों की एक ढेरी को बार-बार गिन रही थीं। वह बड़ी गंभीर नज़र आ रही थी।

"हमें यहाँ से जाना होगा," दादी ने राल्फ को बताया। "हम अल्बुकरके न्यू मेक्सिको चले जायेंगे। वहां का मौसम गर्म है, और हवा खुश्क है। शायद तुम्हारी माँ वहां जाकर ठीक हो जाएँ। और शायद तुम्हारे पिताजी की खांसी भी सुधर जाये। जैसे ही हमारे पास रेलगाड़ी के भाड़े के पैसे जमा हो जायेंगे, हम चले जायेंगे।"

"मुझे पता था," राल्फ ने कहा। "मुझे मालूम था कि हमें और पैसों की ज़रूरत पड़ेगी। और मैं अख़बार बेच कर अधिक नहीं कमा पा रहा हूँ। मुझे कुछ और करना होगा। शायद मैं अगर स्कूल छोड़ दूँ तो.... "

"ठहरो," अम्प ने चिल्ला कर कहा। "एक मिनट! मैं मानता हूँ कि परिवार के प्रति तुम्हारी ज़िम्मेदारी है। लेकिन तुम्हें अपने प्रति भी ज़िम्मेदार होना होगा। अगर तुम स्कूल जाना छोड़ दोगे, तो बाकी ज़िन्दगी तुम क्या करोगे? क्या अनपढ़ बुद्धू ही रहोगे?"

राल्फ जानता था कि अम्प ठीक कह रहा है। और फिर दादी भी उसे कभी स्कूल छोड़ने नहीं देंगी। इसलिए उसने वही किया जो उसे सबसे ठीक लगा। अख़बार बेचना छोड़ कर वह जूते पॉलिश करने का काम करने लगा।

दादी ने तो काम करना जारी रखा ही, उसकी बुआएँ, नेल्ली और एथेल, भी काम करती रहीं। जल्दी ही परिवार ने अल्बुकरके जाने लायक पैसा जमा कर लिया। जब वे ट्रेन पकड़ने स्टेशन पहुंचे तो राल्फ बहुत उत्साहित था। वह सबसे आगे दौड़ रहा था। "आओ, जल्दी करो," वह चिल्ला कर बोला।

"आराम से," अम्प ने उसे आगाह किया। "वर्दी में खड़ा वह आदमी तुम्हें देख रहा है, और तुम्हारी हरकतें उसे बिलकुल अच्छी नहीं लग रहीं।"

वाकई, ट्रेन का कंडक्टर राल्फ की ओर गुस्से से देख रहा था। उन दिनों कुछ रेलगाड़ियों में ख़ास डब्बे होते थे, जिन्हें "जिम क्रो" डब्बे कहा जाता था। नीग्रो लोगों को इन्हीं डब्बों में सफर करना होता था। देश के कुछ हिस्सों में तो बसों में भी पीछे का हिस्सा "जिम क्रो" भाग होता था, और नीग्रो लोगों को केवल इसी भाग में बैठने की इजाज़त थी।

"ए लड़के!" कंडक्टर ने कहा, जब उसने राल्फ को एक सामान्य डब्बे में चढ़ते देखा। "तुम उसमें नहीं चढ़ सकते। ट्रेन के पिछले हिस्से में जाओ।"

जब राल्फ अपने परिवार और अम्प के साथ जिम क्रो डब्बे में सवार हो गया, तो उसने कहा, "यह तो उचित नहीं है।"

"निश्चय ही यह उचित नहीं है," दादी ने कहा, "लेकिन अभी हालत ऐसे ही हैं। शायद भविष्य में इसमें कुछ बदलाव आये।"

"इसे बदलना ही होगा," राल्फ ने कहा। "लोग चाहते हैं कि हम नीग्रो लोग ज़िम्मेदार बनें, और इन सुविधाओं का मूल्य चुकायें। तो हमें वह सुविधा मिलनी ही चाहिए जिसका हमने मूल्य चुकाया है।"

"अच्छी बात है, कि तुम यह सब समझ रहे हो," अम्प ने कहा। "ज़िम्मेदारी एक तरफ़ा नहीं हो सकती। अवश्य तुम्हें ज़िम्मेदार बनना चाहिए, और अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। लेकिन यह देखना भी ज़रूरी है, कि दूसरे लोग तुम्हारे साथ उचित व्यवहार करें।"

"मेरा बस चले तो मैं आगे कभी भी जिम क्रो डब्बे में सफर न करूँ," राल्फ बोला।

"मैं भी चाहता हूँ कि तुम्हें ऐसा न करना पड़े,", अम्प ने कहा।

ट्रेन स्टेशन से निकली और उसने रफ़्तार पकड़ ली। राल्फ बाहर का दृश्य देख रहा था। फिर उसे नींद आ गई। वह फिर जागा, और फिर से सो गया। उसे लग रहा था कि जैसे वह सालों, या फिर सदियों से इस ट्रेन में सफर कर रहा हो। तभी अम्प ने उसे झकझोर कर कहा, "हम पहुँच गए हैं।"
और वे अल्बुकरके पहुँच गए थे। राल्फ ने ऐसी जगह पहले कभी नहीं देखी थी।

"यह तो रेड इंडियन है!", एक लम्बे आदमी को देख कर राल्फ ने कहा। "एक जीता-जागता असली रेड इंडियन!"

"तुम्हें क्या लगा, रेड इंडियन केवल इतिहास की किताबों में होते हैं ?" अम्प ने पूछा। वह मुस्कुराया, जब उसने देखा कि राल्फ एक मेक्सिकन महिला को निहार रहा था, जो एक दूसरी महिला से बातें करने में व्यस्त थी। राल्फ गाड़ियों पर जाते भूरे रंग के लड़कों का हाथ हिला कर अभिवादन कर रहा था।

"लगता है यह जगह मुझे पसंद आएगी," राल्फ ने कहा।
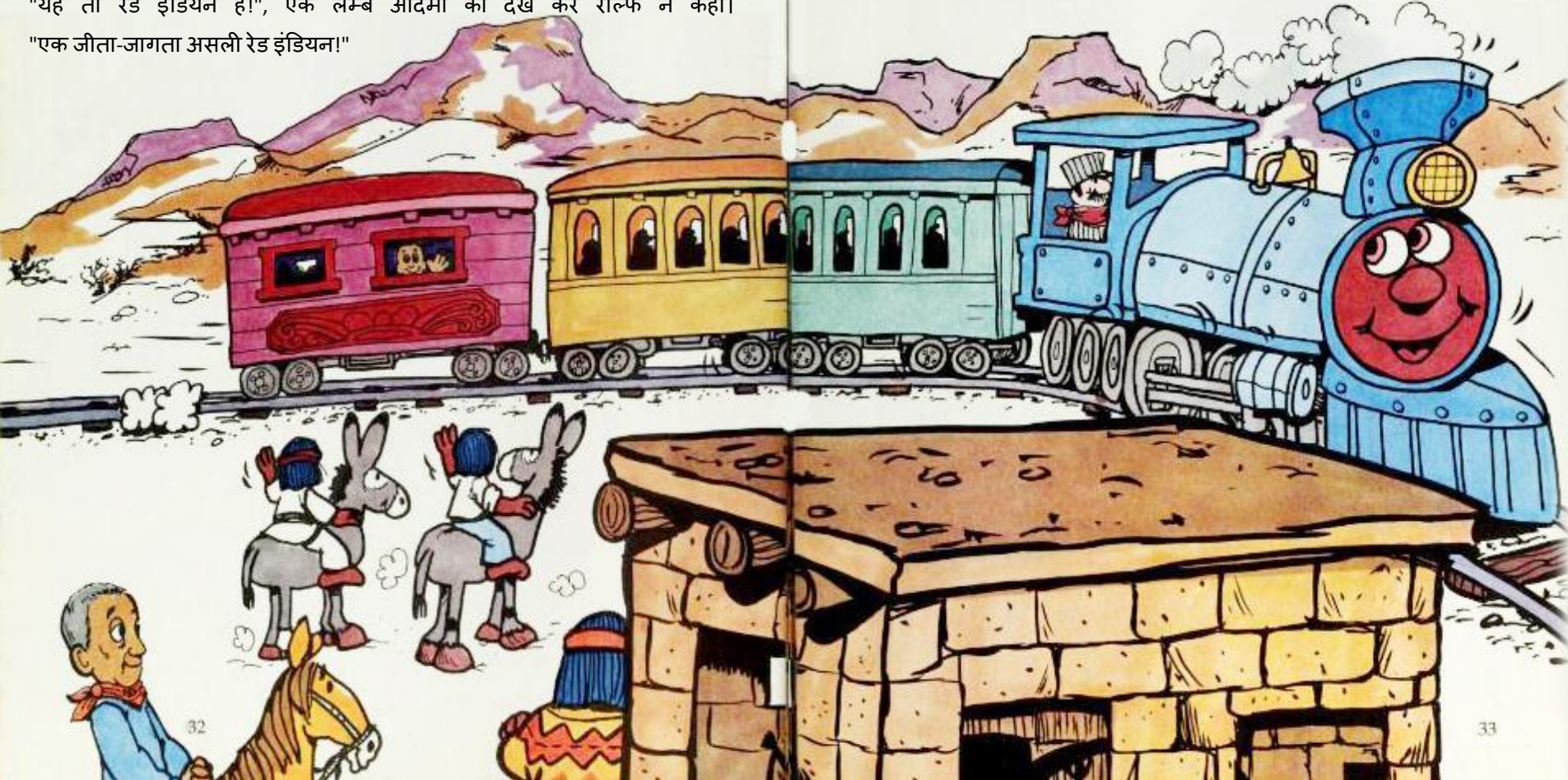
और वाकई राल्फ तो वह जगह पसंद आई। लेकिन जब दादी उसे स्कूल में दाखिला कराने ले गईं, तो वह थोड़ा आशंकित महसूस कर रहा था। उसकी कक्षा में उसके अलावा केवल एक और नीग्रो बच्चा था।

"मुझे लगता है कि शायद डेट्रॉयट में ही ज़िन्दगी बसर करना ज़्यादा आसान होता," राल्फ ने अम्प के कान में फुसफुसा कर कहा। "वहां नीग्रो बच्चे तो ज़्यादा होते थे।"

लेकिन तभी टीचर कक्षा में आ गईं। "मेरा नाम कु. एमा स्वीट है," उसने कहा, और अपना नाम ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया, जिससे वह सबको याद हो जाये। उसके चेहरे पर एक सौम्य मुस्कान थी, और वह सभी छात्रों से आखें मिला कर बात करती।
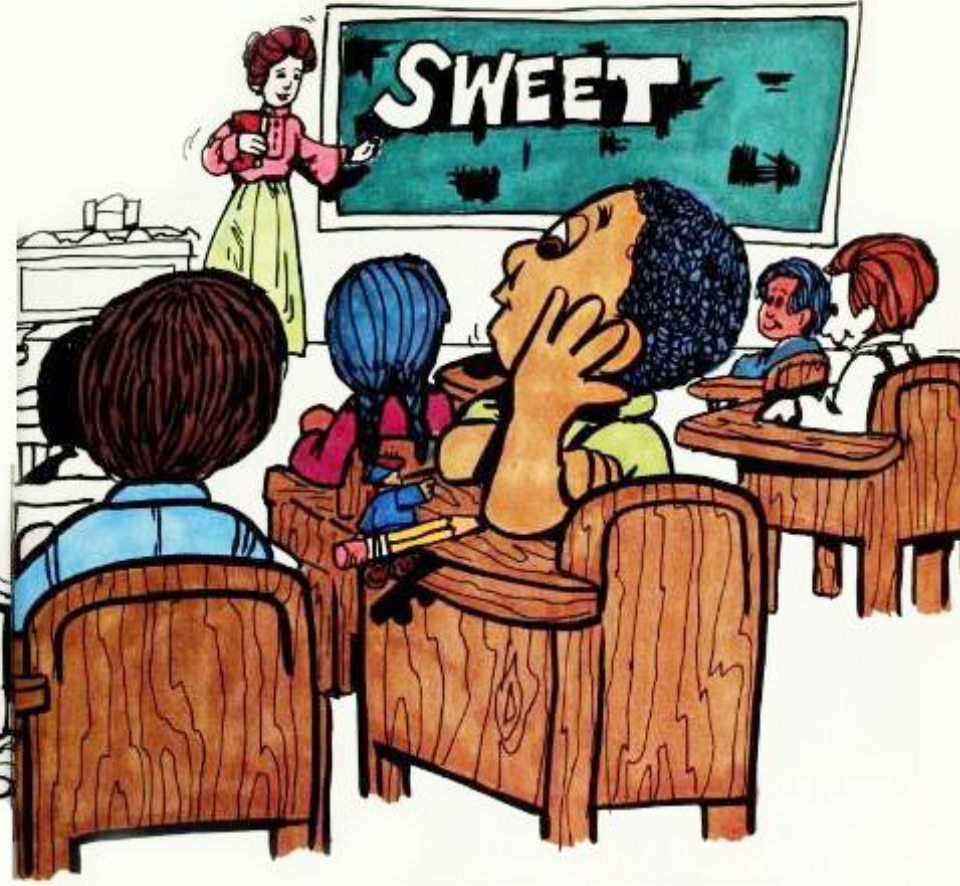
"मुझे अच्छी लगीं ये," अम्प ने धीमी आवाज़ में कहा। "इन्हें देख कर लगता है कि ये सबसे उचित व्यवहार करेंगी। मुझे विश्वास है कि उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम नीग्रो हो या नहीं।"

हमेशा की तरह, अम्प ने बिलकुल ठीक कहा था, क्योंकि वाकई उसने कोई फर्क नहीं किया। कु. स्वीट का जन्म मानो टीचर बनने के लिए ही हुआ था। अपने छात्रों की अच्छाइयों को कैसे उभारना है, उसे अच्छी तरह आता था। राल्फ ने हमेशा से स्कूल में अच्छा प्रदर्शन किया था, लेकिन अब उसका प्रदर्शन वाकई बेहतरीन था।

"तुम तो गज़ब के माहिर हो," अम्प ने उसे चिढ़ाते हुए कहा।

लेकिन राल्फ का व्यवहार पूरी तरह दोषहीन भी नहीं था। बिलकुल नहीं। जब वह अपना काम दूसरे छात्रों से पहले पूरा कर लेता, तो अपने नज़दीक बैठे लड़के से बातें करने लगता। कभी वह कागज़ के गोले बना कर हवा में फेंकता। और जब कोई देख नहीं रहा होता, तो वह अन्य शरारतें करता, जैसे जंगले पर रपटना।
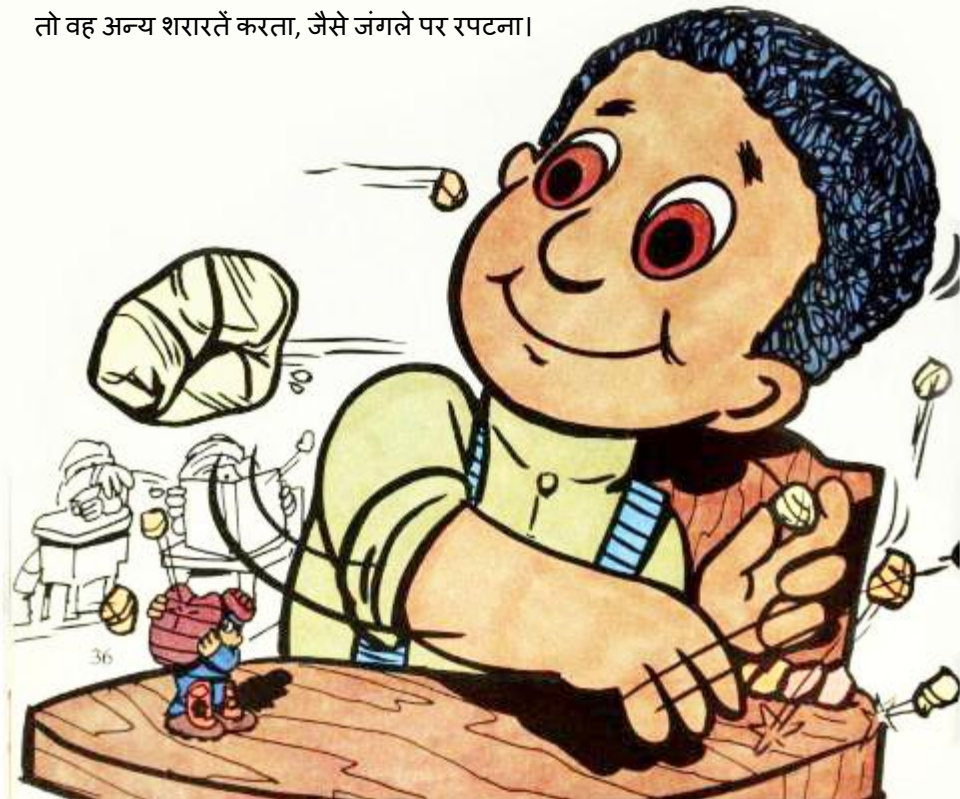
"तुम अफ़सोस करोगे, अगर मिस स्वीट ने तुम्हें पकड़ लिया," अम्प ने उसे चेताया।

और वाकई राल्फ को अफ़सोस करना पड़ गया। मिस स्वीट चाहती थीं कि बच्चे पढ़ें, लेकिन वह उचित व्यवहार पर भी बहुत ज़ोर देती थीं। जब राल्फ कुछ ग़लत करता, तो वे उसे कोने में खड़ा कर देतीं। और जब नतीजे का समय आया तो उचित व्यवहार में राल्फ तो बहुत बुरे अंक मिले।

दादी को व्यवहार में उसके ख़राब अंकों से बहुत अधिक निराशा नहीं हुई। और सभी विषयों में उसका प्रदर्शन अच्छा था, और वह अन्य काम भी कर रहा था, जैसे अखबार बेचना, और बस स्टैण्ड पर लोगों की सामान ले जाने में मदद करना।

और दादी भी काम कर ही रही थीं। वह तो हमेशा ही काम करती थीं। और दोनों बुआएँ भी। हर कोई काम कर रहा था, सिर्फ राल्फ के माता-पिता और नन्हे बच्चे को छोड़ कर। राल्फ की माँ अब बहुत बीमार हो गई थी, और उसके पिता भी। अल्बुकरके आ कर अभी एक साल भी नहीं हुआ था, कि दोनों की मृत्यु हो गई।

दोनों बुआएँ बहुत रोईं, राल्फ भी रोया। लेकिन दादी अधिक नहीं रोईं। जल्दी ही, हमेशा की तरह, वह जो करना था उसे करने में जुट गईं। इस बार उनका काम था, राल्फ की पढाई पूरी करवाना।

"अब अल्बुकरके में रहने का कोई फायदा नहीं, " दादी ने कहा। “हम लॉस एंजेलेस चले जायेंगे। वहां नौजवान लोगों के लिए अधिक अवसर हैं।"

और इस प्रकार परिवार एक बार फिर यात्रा पर निकल पड़ा।

और जब वे लॉस एंजेलेस पहुंचे, जानते हो क्या हुआ?
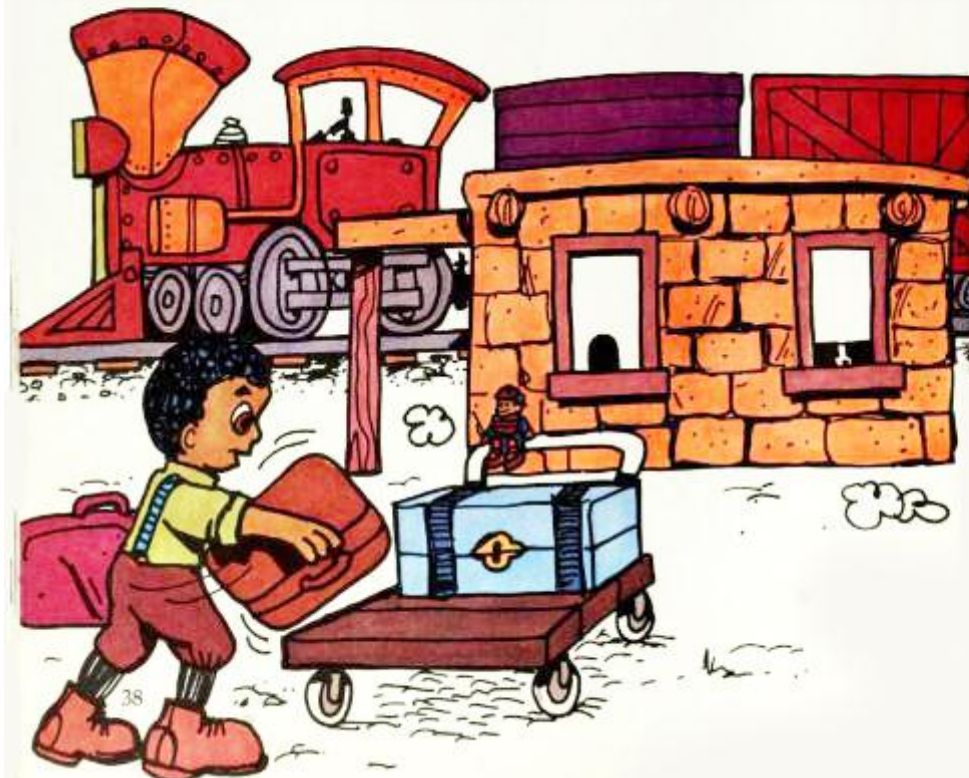
निश्चय ही, फिर से स्कूल। राल्फ को पढाई जारी रखनी थी।

और काम भी जारी रखना था। राल्फ को वहां के अख़बार लॉस एंजेलेस टाइम्स के दफ्तर में चपरासी की नौकरी मिल गई। फिर एक साल उसने एक फिल्म कलाकार के यहाँ घरेलू काम-काज किया। वह अब बड़ा और ताकतवर हो गया था। फिर उसने एक कालीन बनाने की एक फैक्ट्री में रंग की टंकियां उठाने-रखने का काम किया।

राल्फ जब १६ वर्ष का हुआ, उसने जेफ़र्सन हाई स्कूल की वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेना शुरू किया।

"तुम बड़े साहसी हो," अम्प ने कहा। "अधिकांश नीग्रो बच्चे बारहवीं कक्षा तक भी नहीं पहुँच पाते। और तुम? तुम वाद-विवाद प्रतियोगिता में गोरे लोगों को सम्बोधित करोगे?"

राल्फ केवल वाद-विवाद प्रतियोगिता तक ही नहीं रुका। उसने बेसबॉल टीम में भी हिस्सा लिया, और फुटबाल और बास्केटबॉल टीमों में भी। उसके सभी विषयों में सबसे अधिक अंक आये। यहाँ तक कि उसे वाद-विवाद प्रतियोगिता और अंग्रेज़ी निबंध-लेखन के लिए पदक भी मिले।
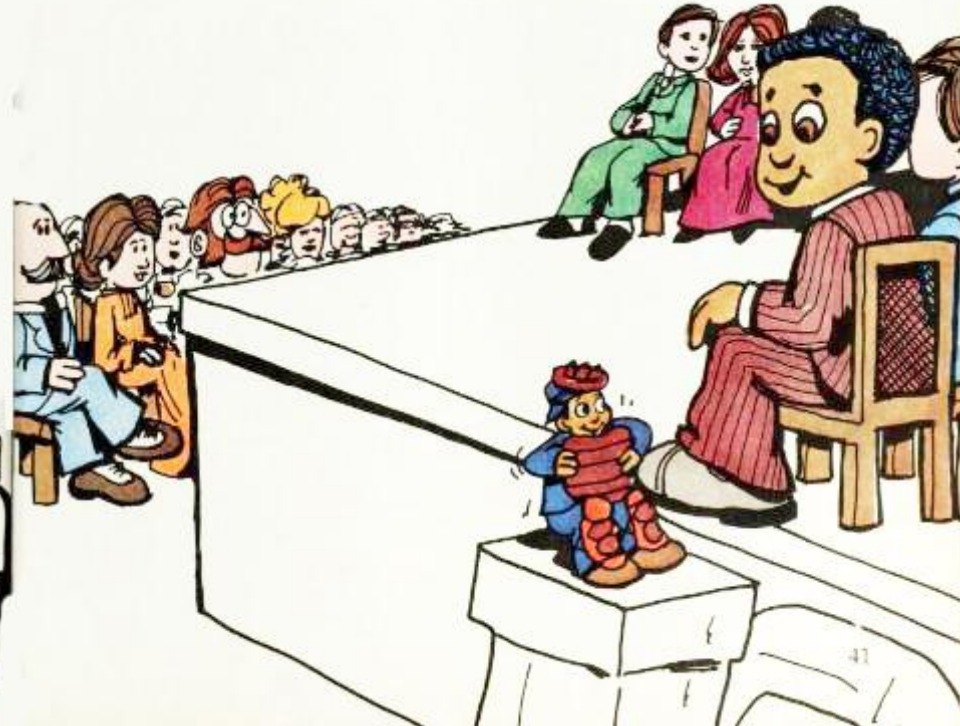
दीक्षांत समारोह के दिन उसे पता चला कि उसने इन पदकों से भी अधिक महत्वपूर्ण चीज़ हासिल की है। "दादी," वह उत्साह से बोला। "वे मुझे कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति देना चाहते हैं।"

लेकिन यह कहते ही उसके मन में दुःख की एक लहर दौड़ गई। "असल में मैं जाना नहीं चाहता," उसने जल्दी से कहा। "हमारे पड़ोस के अधिकतर बच्चों ने हाई स्कूल भी पूरा नहीं किया। मुझे अब कुछ काम करके पैसा कमाना चाहिए।"

"मुझे लगता है," अम्प ने कहा, "कि शायद दादी तुम्हारी बात सुन ही नहीं रहीं हैं।"

और सच में दादी ने उसकी एक न सुनी। जब राल्फ ने उससे अपनी ज़िम्मेदारियों का ज़िक्र किया, दादी ने सर हिलाते हुए कहा, "राल्फ बंच, तुम्हारी सबसे पहली ज़िम्मेदारी स्वयं अपने प्रति है। तुम कॉलेज इसलिए जा रहे हो जिससे कि तुम कुछ खास बन सको। क्योंकि तुम वाकई बहुत खास हो।"

तो तुम्हें क्या लगता है? राल्फ ने क्या किया होगा ?

बेशक, उसने कॉलेज जाने का ही फैसला किया। उसने इतनी मेहनत की, और इतनी लगन से पढ़ाई की, कि जब उसकी पढाई पूरी हुई, उसे विशेष प्रशंसा और सम्मान के साथ डिग्री दी गई।

"क्या अर्थ है इस विशेष सम्मान और प्रशंसा का ?" अम्प ने पूछा।

"इसका अर्थ है कि इस कॉलेज से उत्तीर्ण होने वाले किसी भी छात्र को जो सर्वोच्च सम्मान दिया जा सकता है, वह मुझे दिया गया है" राल्फ ने कहा।

"और तुम्हारी दादी यह सुन कर ख़ुशी से फूली नहीं समायेंगी," अम्प बोला। "ज़रा उन्हें पता तो लगने दो कि तुम्हें हारवर्ड विश्विद्यालय जाने के लिए छात्रवृत्ति मिली है।"

"मुझे पता था कि ज़रुर तुम कुछ ख़ास बनोगे," दादी ने यह समाचार सुन कर राल्फ से कहा।

फिर कुछ समय बाद दादी एक रात को सोते-सोते ही शांतिपूर्वक स्वर्ग सिधार गईं। राल्फ के मन पर एक गहरी उदासी छा गई।

"चिंता मत करो," अम्प ने कहा। "तुमने उन्हें जीवन में बहुत ख़ुशी दी। अब अपने जीवन में जो अच्छे से अच्छा कर सकते हो, करो। दादी भी यही चाहेंगी। उसके सारे सपने तुम्हारे लिए ही तो थे।"
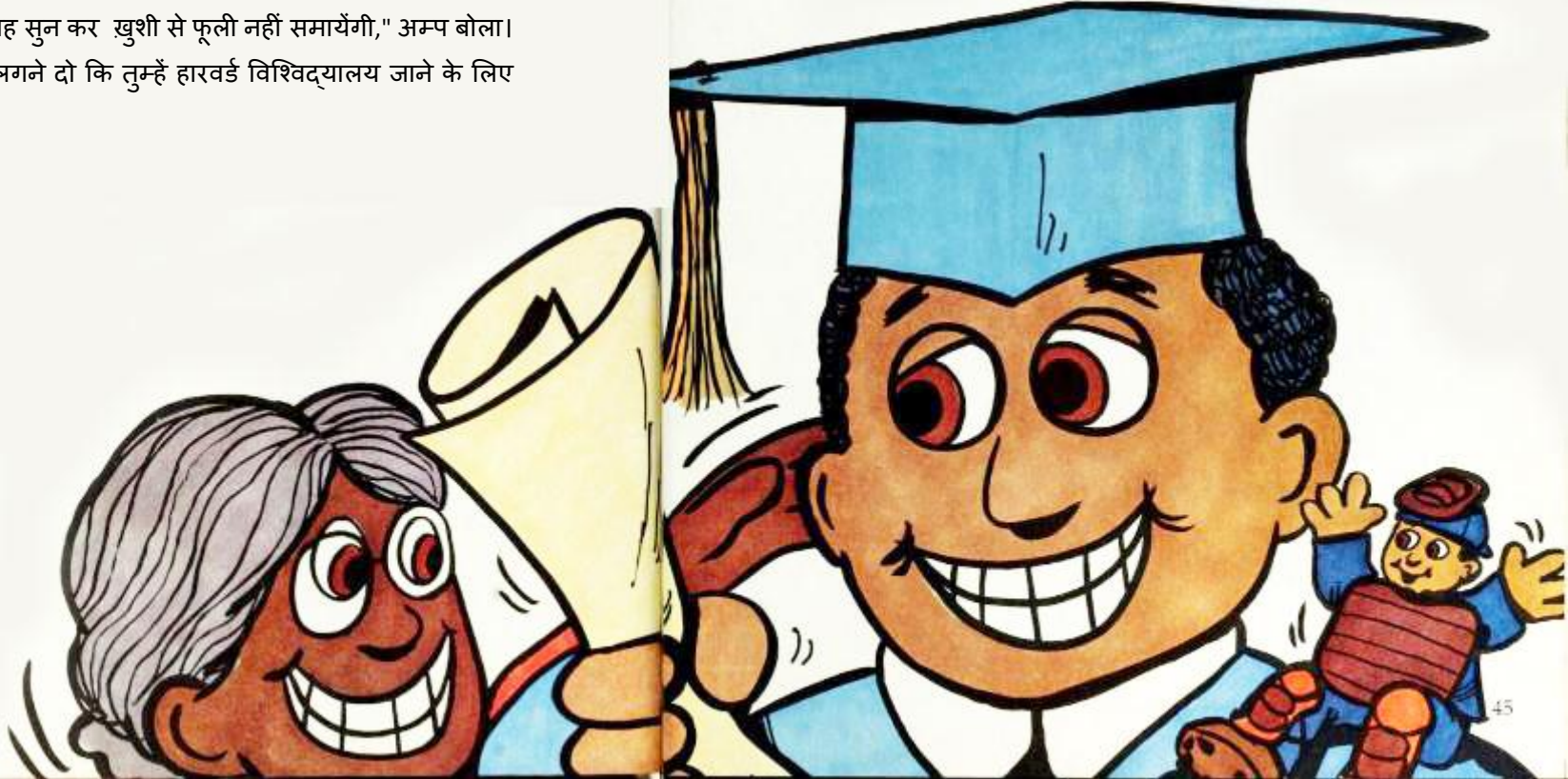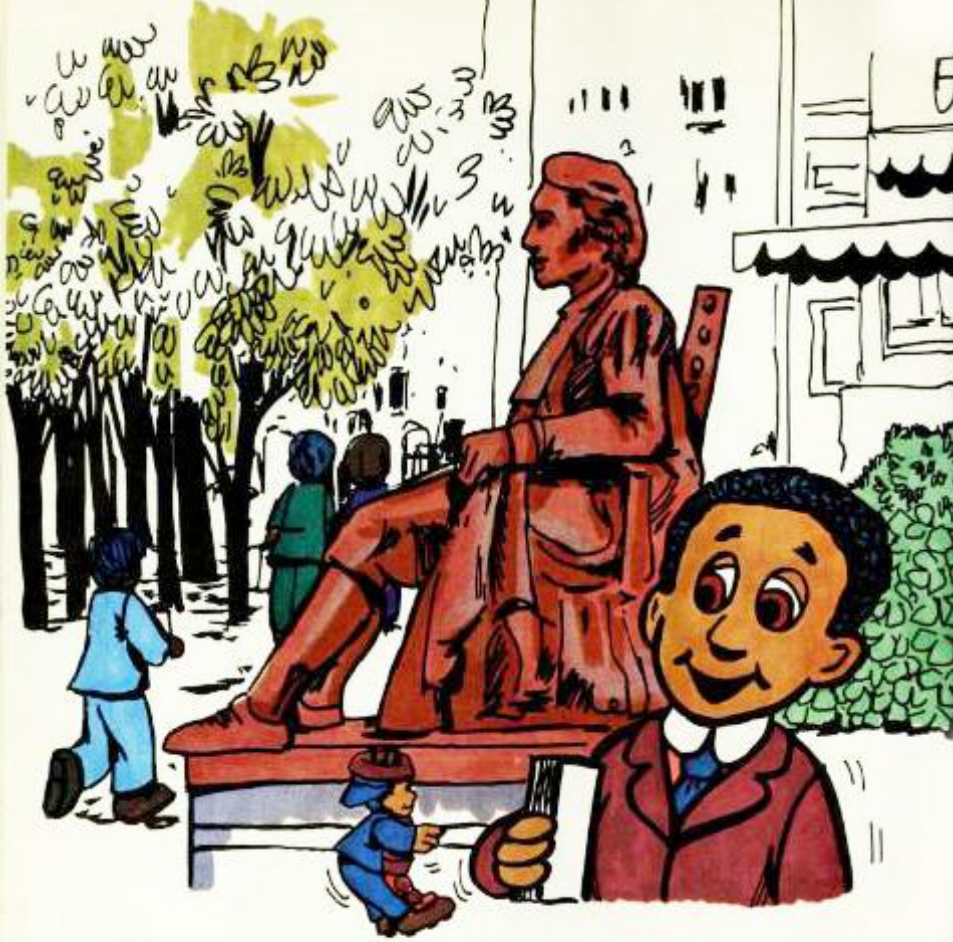
और फिर राल्फ हारवर्ड चला गया। और वहां पहली बार उसकी मुलाकात अपनी ही तरह उच्च-शिक्षित नीग्रो लोगों से हुई। वे सभी छात्र थे, और राल्फ की ही तरह गरीब परिवारों से थे। लेकिन सभी अपने उज्जवल भविष्य की महत्वाकांक्षा रखते थे। कक्षाएं समाप्त होने के बाद, शाम के समय वे इकट्ठा होते। वे अमेरिका में अपने नीग्रो होने को लेकर काफी बातचीत करते।

अक्सर यह वार्तालाप काफी उत्तेजनापूर्ण हो जाते थे। कभी कभी तो इतनी तेज़ बहस हो जाती कि झगडे की नौबत आ जाती।

"अरे," अम्प ने चिल्ला कर कहा। "हमें बीच-बचाव के लिए एक अंपायर की ज़रूरत है। कुछ करो, इससे पहले कि किसी को चोट-फेंट लग जाये।"

"फिर राल्फ भी बहस में कूद पड़ता। और क्योंकि वह बहुत सोच-समझ कर बोलता था, उसके मुंह से कोई गैर-ज़िम्मेदाराना बात नहीं निकलती थी। इसलिए, उसकी बातें सुन कर दूसरे हमेशा शांत हो जाते थे।"

हारवर्ड से अपनी पढाई समाप्त करने के बाद राल्फ ने वाशिंगटन की हॉवर्ड यूनिवर्सिटी में अध्यापन कार्य शुरू किया। यह अमेरिका की सबसे प्रसिद्ध नीग्रो लोगों की यूनिवर्सिटी थी। राल्फ की कक्षाओं में अनेकों बुद्धिमान और महत्वाकांक्षी नीग्रो छात्र थे।

राल्फ एक कुशल शिक्षक था, और वह छात्रों को बहुत सी उत्साहपूर्ण बातें बताया करता था। इस कारण वह छात्रों में बहुत लोकप्रिय था। लेकिन वह छात्रों से कठिन परिश्रम की उम्मीद भी रखता था।

एक शाम जब राल्फ कापियां जाँच रहा था, अम्प ने पूछा, "क्या इस बात का भी ज़िम्मेदारी से कुछ सम्बन्ध है?"

"बिलकुल, पूरा सम्बन्ध है," राल्फ ने कहा। "यदि मैं छात्रों को पढ़ाने में जी जान लगा दूँ, और यह सुनिश्चित न करूँ की वे भी पूरी मेहनत करें, तो मेरा उद्देश्य कहाँ पूरा हुआ? न यह मेरे लिए अच्छा होगा, और न ही उनके लिए।"

तभी अचानक राल्फ शून्य में देखता, सोच में डूब गया।

"तुम किसी सुखद कल्पना में खोये हो, है न?" अम्प ने कहा।

सच में ऐसा ही था।

राल्फ अपनी एक नौजवान छात्रा रुथ हैरिस के बारे में सोच रहा था। "क्या तुम्हें नहीं लगता कि रुथ कक्षा के अधिकांश छात्रों से अधिक बुद्धिमान है?" उसने अम्प से पूछा।

"अवश्य," अम्प ने कहा। "और सुन्दर भी। या तुमने शायद इस ओर ध्यान ही नहीं दिया।"

लेकिन राल्फ ने अवश्य ध्यान दिया था। अगले दिन राल्फ ने रुथ को एक निबंध पर विचार-विमर्श के लिए बुलाया। वह काफी देर बोलता रहा, और रुथ सुनती रही। फिर रूथ बोलती रही और वह सुनता रहा। इसके बाद वे बार-बार मिलने लगे, और देखते ही देखते दोनों ने विवाह करने का निश्चय कर लिया।

राल्फ के पास हॉवर्ड विश्वविद्यालय की नौकरी अवश्य थी, पर उसके पास अधिक पैसे नहीं थे। बहुत मेहनत से बचत करके उसने १५० डॉलर बचाये, ताकि वह हनीमून पर जा सके। फिर उसकी और रुथ की शादी हो गई।

एक वर्ष बाद राल्फ को यूरोप और अफ्रीका जाने का एक अवसर मिला। उसे वहां जाकर वहां के लोगों की समस्याओं का अध्ययन करना था। "यह एक बहुत बड़ा अवसर है," राल्फ ने रुथ से कहा, "लेकिन मैं नहीं जा सकता। मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहता।"

रुथ ने कहा, "राल्फ, जब मैंने तुमसे विवाह किया था, मुझे तभी पता था कि तुम एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनने जा रहे हो। मैं जानती थी कि हमें एक दूसरे से दूर रहना पड़ सकता है। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। तुम्हें जाना चाहिए, और यह अध्ययन करना चाहिए।"

"तुमने एक बहुत अच्छी महिला से विवाह किया है," अम्प ने कहा।

"बिलकुल," राल्फ ने सहमति जताई। और वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। विवाह के बाद के वर्षों में उसने सारी दुनिया का भ्रमण किया, और उन बातों का अध्ययन किया, जिनसे लोगों के बीच भेदभाव व अन्य समस्याएं पैदा हो रही थीं। फिर वह अध्ययन के लिए वापस हारवर्ड गया, और पहला ऐसा नीग्रो व्यक्ति बना जिसे अमेरिका में राजनीति शास्त्र में डॉक्टरेट की डिग्री मिली। उसका जीवन हर प्रकार से परिपूर्ण और सुखी था, लेकिन फिर भी वह आगे के स्वप्न देखता रहता था।

उसने अम्प से कहा, "हमें ज़रूरत है एक ऐसी जगह की, जहाँ संसार के सभी देशों के लोग एकत्रित होकर बातचीत कर सकें। एक ऐसी जगह, जहाँ वे अपने मतभेदों को सुलझाने के उपाय खोजने के लिए चर्चा कर सकें।"

१९४१ में जब अमेरिका दूसरे विश्व युद्ध में भाग ले रहा था, राल्फ को एक सरकारी सलाहकर नियुक्त किया गया। फिर १९४३ में वह पहला नीग्रो व्यक्ति बना जिसे गृह मंत्रालय में विभागाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया।

अम्प ने कहा, "तुम उन्हें एक महत्वपूर्ण सन्देश दे रहे हो, कि नीग्रो लोग भी उतने ही ज़िम्मेदार हो सकते हैं, जितने कि अन्य लोग। बहुत से लोग यह बात नहीं समझते हैं।"

"तो उन्हें अब समझ आ जायेगा," राल्फ ने शांत स्वर में कहा।

१९४५ में जब युद्ध समाप्त हुआ, तब तक राल्फ को अधिक प्रसिद्धि नहीं मिली थी, लेकिन सरकारी महकमों में अधिकांश लोग उसे जानते थे। उन्हें पता था कि वह बहुत तीक्ष्ण बुद्धि का धनी है।

वे जानते थे, कि वह अपने तैयारी पूरी रखता है, जानकारियां हासिल करता रहता है, और उसे परिस्थितियों की अच्छी समझ रहती है। संक्षेप में कहें, तो वे जानते थे कि राल्फ स्वयं भी ज़िम्मेदार है, और दूसरों को भी ज़िम्मेदार बना सकता है।

क्योंकि वह इन सब गुणों का धनी था, राल्फ को संयुक्त राष्ट्र का संविधान तैयार करने में सहायता करने को कहा गया।

"यह तो बहुत सुखद बात है," राल्फ उत्साह से बोला। "लगता है मेरा सपना सच होने जा रहा है। आख़िरकार अब एक ऐसी जगह होगी, जहाँ सभी देशों के लोग मिल कर अपनी समस्याओं के बारे में चर्चा कर सकेंगे।

"देर आए, दुरुस्त आए," अम्प ने कहा।

कुछ समय तक ऐसा लगा कि शायद संयुक्त राष्ट्र अपने लक्ष्य में सफल न हो पाए। फिर १९४७ में, जब यह संस्था अभी नई ही थी, नए राष्ट्र इजराइल की स्थापना से सम्बंधित विवादों को लेकर फिलिस्तीन में युद्ध प्रारम्भ हो गया।

ट्रिग्वे लाई तब सयुंक्त राष्ट्र के महा-सचिव थे, और उन्होंने राल्फ को बुलाया, और कहा, "तुम एक अच्छे कूटनीतिज्ञ हो, और विनम्रता से बात करते हो। लेकिन जब तुम बोलते हो, लोग तुम्हें ध्यानपूर्वक सुनते हैं। तुम लोगों में ज़िम्मेदारी का भाव जगा सकते हो। मैं चाहता हूँ कि तुम प्रयास करो कि अरब और यहूदी लोग युद्ध समाप्त करके शांति समझौता कर लें। क्या तुम यह कर सकते हो?"

"यह काम आसान नहीं है," अम्प ने कहा। "अरब और यहूदी एक दूसरे को बिलकुल पसंद नहीं करते। उनके बीच समझौता कराना तुम्हारे लिए बहुत कठिन होगा।"

"मैं अवश्य कोशिश करूँगा," राल्फ ने कहा, और यात्रा की तैयारी करने लगा। "यदि संयुक्त राष्ट्र इस बार शांति कायम करने में सफल नहीं हुआ, तो भविष्य में शायद वह कभी एक शांति स्थापित करने वाली संस्था के रूप में कार्य नहीं कर पायेगा।"

अरब और यहूदियों के बीच मुलाकात एक निष्पक्ष स्थान, यानि ग्रीस के रोड्स नामक द्वीप पर आयोजित की गई। राल्फ ने इस कार्य की सफलता के लिए रात-दिन एक कर दिया। उसने दोनों पक्षों से शांति स्थापित करने के लिए आग्रह किया। कई बार उसे क्रोध भी आया। कभी कभी वह बहुत थका हुआ महसूस करता था। उसे रुथ की याद आ रही थी, और वह घर वापस जाना चाहता था। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी।

"तुम एक गज़ब के सुलहकार हो।" अम्प ने कहा।
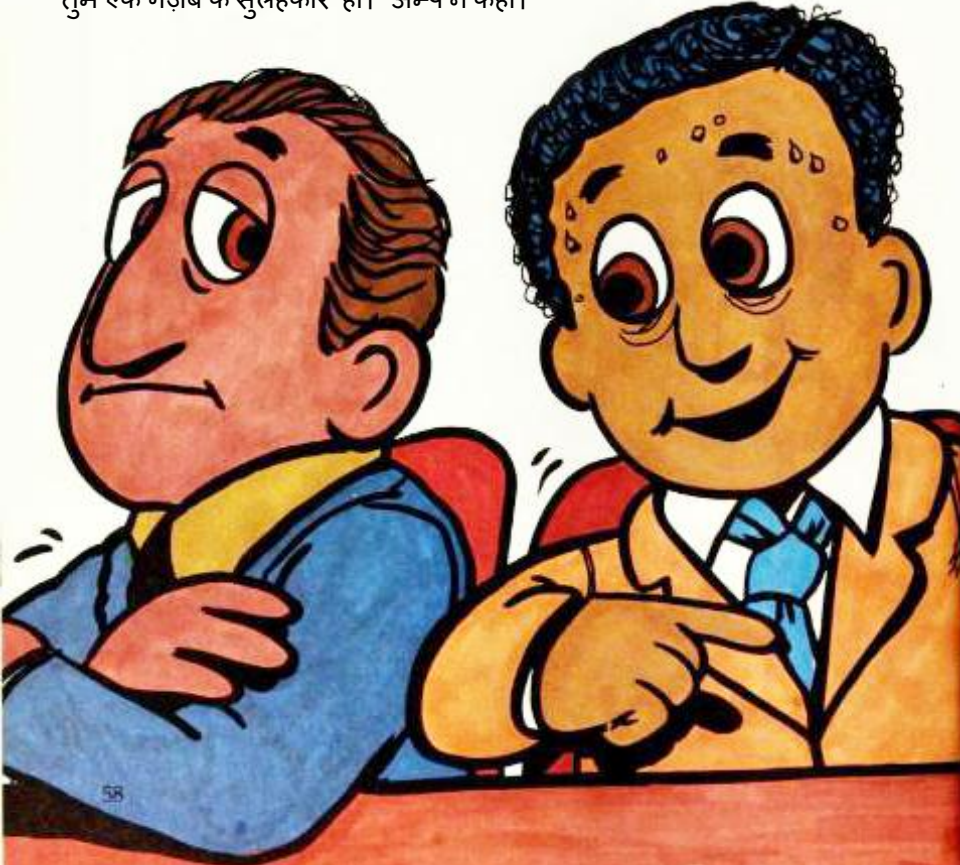
"मैं उम्मीद तो यही करता हूँ," राल्फ ने कहा। फिर उसने दोनों ओर के प्रतिनिधियों को एक अंतिम मुलाकात के लिए बुलाया। यह मुलाकात पूरे दिन और पूरी रात चली। सभी बुरी तरह थक चुके थे, लेकिन राल्फ ने किसी को जाने नहीं दिया। उसने वार्तालाप रुकने नहीं दिया। और क्योंकि दोनों पक्ष उसे जानते थे, और उस पर भरोसा करते थे, और क्योंकि वह बहुत ज़िम्मेदार था, वह उनमें भी ज़िम्मेदारी की भावना जगा सका।

आखिरकार, जब तक रोड्स में सूर्योदय हुआ, शांति समझौते पर हस्ताक्षर हो ही गए! राल्फ बंच के प्रयासों से फिलिस्तीन का युद्ध आखिर समाप्त हुआ, और संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापित करने में सफल हुआ।
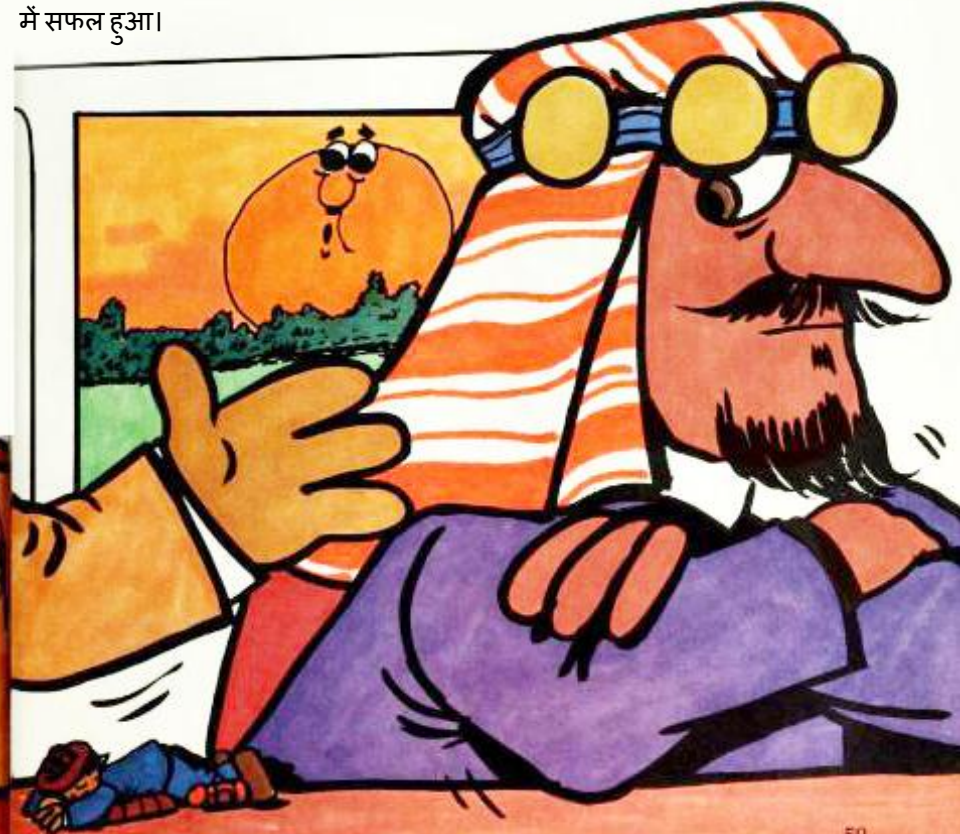
राल्फ जब रोड्स से वापस घर पहुंचा, एयरपोर्ट पर सैकड़ों की भीड़ उसके स्वागत के लिए खड़ी थी। उसके सम्मान में मैनहट्टन में एक परेड निकाली गई। राष्ट्रपति ट्रूमैन ने भी उससे वाइट हाउस में भेंट की। उसे लॉस एंजेलेस भी बुलाया गया, जहाँ "राल्फ बंच दिवस" पर उसके स्वागत-सम्मान के लिए हज़ारों लोग जमा हुए।

फिर राल्फ को पता चला कि उसे विश्व के सर्वोच्च सम्मान, यानि नोबेल शांति पुरस्कार, से सम्मानित किया जायेगा।

"दादी कितना नाज़ करतीं तुम पर आज!" अम्प ने कहा।

राल्फ जानता था कि दादी वाकई उस पर नाज़ करतीं, और यह सोच कर उसका मन प्रसन्न हो गया। इससे भी ज़्यादा ख़ुशी उसे इस बात की थी, कि उसने अपनी ज़िम्मेदारी निभाई थी। फिलिस्तीन में शांति स्थापित करने में अपनी भूमिका निभा कर उसने राष्ट्र संघ को बचाने में भी योगदान दिया था। उसने देखा कि क्या करने की आवश्यकता है,और फिर उसे किया भी।

तुम जब कोई करने योग्य काम देखते हो, तो क्या तुम उसे पूरा करते हो? अगर तुम ऐसा करते हो, तो तुम भी एक ज़िम्मदार इंसान बन जाते हो, और फिर दूसरे लोग भी तुम्हारे प्रति ज़िम्मेदारी निभाते हैं। संभावना यही है कि ऐसा करने से तुम्हारा जीवन अधिक सुखी बनेगा।

ठीक वैसे ही, जैसे हमारे मित्र राल्फ बंच का बना।
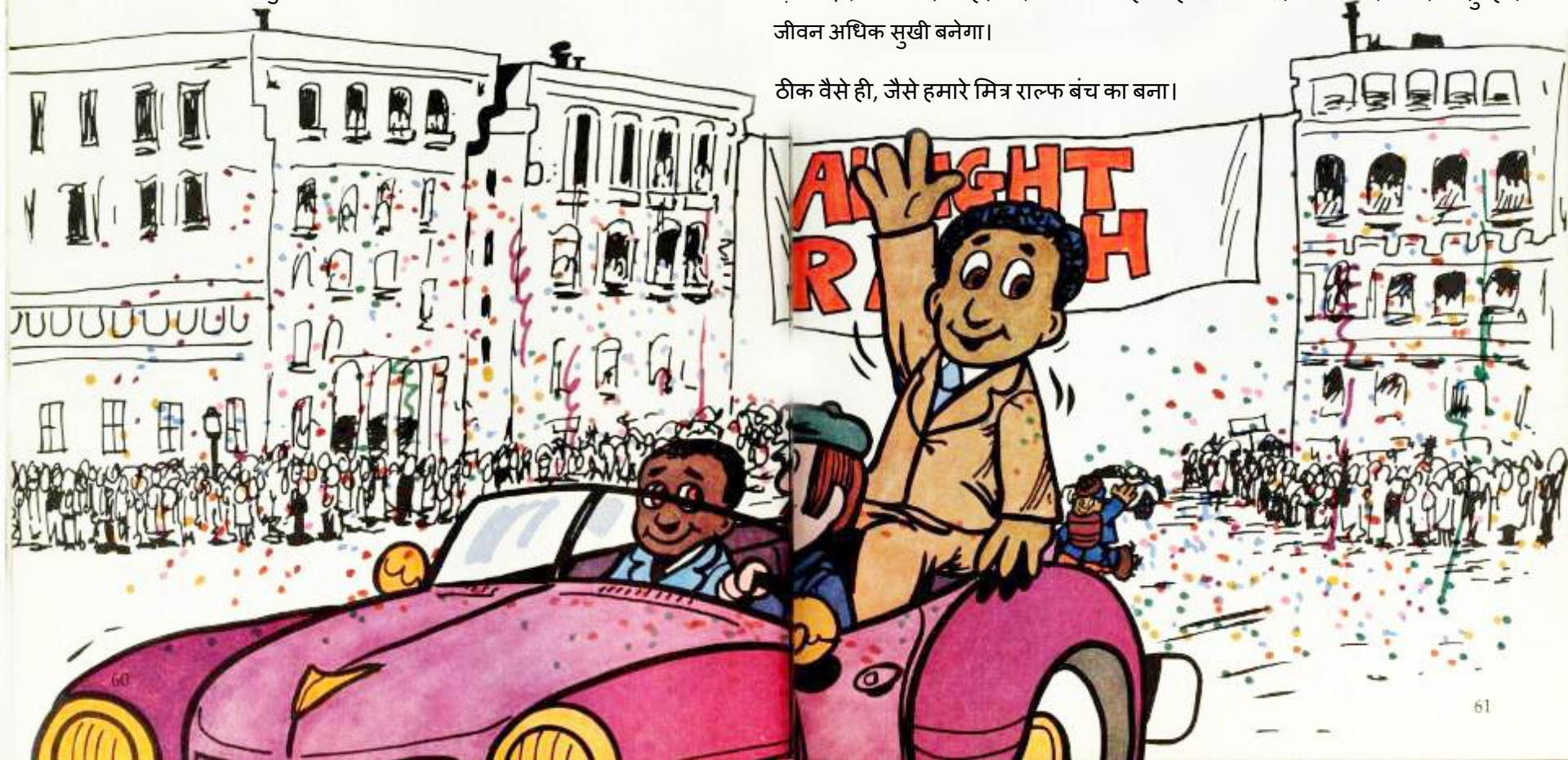
राल्फ बंच
(1904-1971)

ऐतिहासिक तथ्य

जाति-संबंधों के क्षेत्र में संसार के प्रमुख विद्वान, राल्फ जॉनसन बंच ने संयुक्त राष्ट्र के गठन में मुख्य भूमिका निभाई थी। १९५० में फिलिस्तीनी युद्ध के दौरान इजराइल और अरब देशों के मध्य समझौता कराने के लिए उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

राल्फ बंच का जन्म ७ अगस्त १९०४ को डेट्रॉयट मिशिगन में हुआ था। उनके पिता फ्रेड बंच बाल काटने का काम करते थे। उनकी माँ का नाम था ऑलिव एग्नेस जॉनसन, जिनके पिता एक जन्मजात गुलाम थे।

१९१५ में बंच परिवार अलबुकरके न्यू मेक्सिको चला गया, क्योंकि राल्फ की माँ को जोड़ों का बुखार और पिता को तपेदिक हो गई थी। उनको आशा थी कि दक्षिण-पूर्व का गर्म और खुश्क मौसम उनकी बीमारी में लाभ करेगा। अल्बुकरके में राल्फ की भेंट उसकी अध्यापिका कु. एमा स्वीट से हुई, जिसने उसे एक उत्कृष्ट विद्यार्थी बनने के लिए प्रेरित किया।

राल्फ की दादी, लूसी जॉनसन का भी राल्फ के जीवन को संवारने में बहुत बड़ा योगदान रहा। राल्फ के अनुसार उसकी दादी "पांच फुट से भी छोटी होने के बावजूद सबसे सशक्त महिला थीं।" राल्फ के माता-पिता की मृत्यु के बाद राल्फ और उसकी बहन को पालने-पोसने की ज़िम्मेदारी उसकी दादी ने ही निभाई, और उसने ही राल्फ को अपनी पढाई पूरी करने के लिए प्रेरित किया। लॉस एंजेलेस में जेफ़र्सन हाई स्कूल से उत्तीर्ण होने के बाद आगे पढाई जारी रखने के बारे में राल्फ के मन में संशय था। लेकिन उसकी दादी ने उसे प्रेरित किया कि वह छात्रवृत्ति स्वीकार करके यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया में पढाई करने जाये।

यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया में राल्फ ने अत्यधिक अनुशासन और ऊर्जा का प्रदर्शन किया, और यह अनुशासन और ऊर्जा उसके पेशेवर जीवन में सदा बनी रही। विश्विद्यालय की बास्केटबॉल प्रतियोगिता में तीन बार उसने शानदार खेल का प्रदर्शन किया। वह फुटबॉल और बेसबॉल भी खेलता था। वह अनेक वाद-विवाद प्रतियोगिताएं में भी भाग लेता था। १९२७ में जब उसने स्नातक परीक्षा पास की तो वह "फाई बीटा काप्पा" का सदस्य था, और उसे विशेष सम्मान और प्रशंसा के साथ डिग्री दी गई।

वहां से राल्फ हारवर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ने गया, जहाँ उसने सरकारी प्रशासन विषय में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। फिर वह वाशिंगटन डी. सी. की हॉवर्ड यूनिवर्सिटी में राजनीति शास्त्र का अध्यापक बन गया। वहीँ उसकी भेंट रुथ हैरिस से हुई, और दोनों का विवाह हुआ। चार वर्ष तक हॉवर्ड में पढ़ाने के बाद डॉक्टरेट की पढाई के लिए वह वापस हारवर्ड को गया। १९३४ में वह पहला नीग्रो था जिसे राजनीति शास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई।

राल्फ ने हॉवर्ड में अध्यापन कार्य जारी रखा। साथ ही उसने अमेरिका, इंग्लैंड और अफ्रीका में लोगों की सामाजिक परिस्थितियों का भी अध्ययन किया। सरकारी स्तर पर सभी लोग जान गए कि राल्फ को औपनिवेशिक देशों के लोगों के बारे में गहन जानकारी है। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान उसने कूटनीतिक सेवा कार्यालय में काम किया, और बाद में गृह मंत्रालय में भी। फिर १९४६ में उसे संयुक्त राष्ट्र के ट्रस्टीशिप विभाग का निदेशक नियुक्त किया गया।

१९४८ में राल्फ बंच को फोल्के बर्नाडॉट के स्थान पर संयुक्त राष्ट्र के फिलिस्तीन कमीशन का प्रमुख मध्यस्थ नियुक्त किया गया। बर्नाडॉट जब इसाइलीयों और अरबों के बीच युद्ध विराम के लिये प्रयासरत थे, उनकी हत्या कर दी गई थी। जब राल्फ ने उसकी जगह ली, तो संधि-वार्ता का स्थान फिलिस्तीन से बदल कर एक निष्पक्ष स्थान, यानि रोड्स द्वीप, कर दिया गया। वहां राल्फ ने अपनी कूटनीतिक प्रतिभा का भरपूर प्रयोग करके दोनों पक्षों को शांति के लिए सहमत करने की कोशिश की। चौबीसों घंटे काम करते हुए वह दोनों पक्षों के नेताओं से बातचीत करता, और बातचीत की प्रगति का लेखा-जोखा तैयार करवाता। अंततः उसने जो शांति-समझौता करवाया वह अगले बीस वर्षों तक स्थापित रहा।

अपने जीवनकाल में राल्फ बंच को विश्व भर से प्रशंसा और सम्मान मिला। निश्चय ही यह उसके लिए महत्वपूर्ण था। लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण उसके लिये यह था कि जो भी कार्य उसने हाथ में लिया, उसे सफलता पूर्वक पूरा किया। यदि वह रोड्स की मध्यस्थता में विफल हो जाता, या थकान और क्षोभ के कारण हार मान लेता, तो फिलिस्तीन का युद्ध शायद जारी रहता। यानि और अधिक लोगों की जानें जातीं। और संयुक्त राष्ट्र एक शांति स्थापित करने वाली संस्था के रूप में शायद सदा के लिए निष्प्रभावी हो जाता।

समाप्त